विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मंदिर

सी-41, सेक्टर-12, नोएडा

0120-4545608

WEBSITE: ssmnoida.in

GMAIL: ssm.noida@gmail.com

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर ,सी - 41, सेक्टर – 12, नोएडा

मासिक ई-पत्रिका, फरवरी – 2026

ज्ञानोदय (अंक-64)

संरक्षक मंडल

श्री प्रताप मेहता
श्री प्रदीप भारद्वाज
श्री कृष्ण कुमार बंसल
श्री राजीव नाईक
श्री नितीश आर्य
श्री जितेन्द्र कुमार गौतम
श्री सुशील कुमार

मार्गदर्शक

श्री देवेन्द्र शर्मा (प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा

संपादक मंडल

श्री लेखराज सिंह (आचार्य)
श्री दीपक कुमार
श्रीमती तरुणा सक्सेना
ब०अनु सिंह
सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा

अनुक्रमणिका

- संपादकीय
- प्रधानाचार्य जी की कलम से
- महावीर जयंती
- विश्व महिला दिवस
- विश्व जल दिवस
- शहीद दिवस
- हिन्दू नव वर्ष
- झूलेलाल जयंती
- डॉ हेडगेवार जन्म दिवस
- मातृ हस्तेन भोजनम् कार्यक्रम
- चलचित्र अवलोकन
- रामकृष्ण परमहंस जयंती
- वेश प्रतियोगिता
- आचार्य-अभिभावक घोस्ती
- अंग्रेजी संभाषण
- हिन्दू सम्मलेन कार्यक्रम
- छत्रपति शिवाजी एवं श्री गुरूजी जयंती
- प्रवेश परीक्षा
- सप्त शक्ति समापन कार्यक्रम
- जन्मोत्सव हवन पूजन कार्यक्रम
- बताओ तो जानें
- पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी

संपादकीय

परीक्षा: सफलता की ओर एक सुनहरा अवसर

प्रिय भैया-बहिनों,

परीक्षा शब्द सुनते ही कई विद्यार्थियों के मन में घबराहट, तनाव और डर उत्पन्न हो जाता है। परंतु क्या सच में परीक्षा डरने की चीज़ है? नहीं! परीक्षा तो वह सीढ़ी है, जो हमें हमारी मंज़िल की ओर अधिक निकट ले जाती है।

परीक्षा हमारे ज्ञान, धैर्य और आत्मविश्वास की परख है। यह केवल अंकों का खेल नहीं है, बल्कि यह हमारे परिश्रम, अनुशासन और समय प्रबंधन का परिणाम है। जो विद्यार्थी पूरे वर्ष मन लगाकर अध्ययन करते हैं, उनके लिए परीक्षा उत्सव के समान होती है।

परीक्षा हमें यह समझने का अवसर देती है कि हमने क्या सीखा और कहाँ सुधार की आवश्यकता है। जैसे सोना आग में तपकर कुंदन बनता है, वैसे ही विद्यार्थी परीक्षा की प्रक्रिया से गुजरकर और निखरता है।

कुछ महत्वपूर्ण सुझाव:

- **समय सारणी बनाकर पढ़ाई करें।**
- **प्रतिदिन पुनरावृत्ति (Revision) अवश्य करें।**
- **लिखने का अभ्यास बढ़ाएँ।**
- **सकारात्मक सोच बनाए रखें।**
- **पर्याप्त नींद और संतुलित आहार लें।**

प्रिय भैया-बहिनों, परीक्षा जीवन का एक छोटा सा पड़ाव है, इसे ज्ञान और क्षमता को सिद्ध करने का अवसर मानें।

आत्मविश्वास, परिश्रम और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ें—सफलता अवश्य आपके कदम चूमेगी।

अनु सिंह
अंक सम्पादक (ज्ञानोदय)

चैत्र शुक्ल वर्ष प्रतिपदा महोत्सव

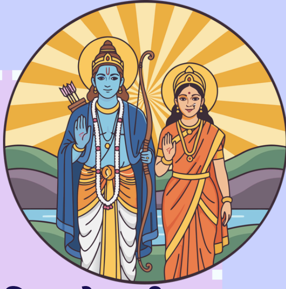

प्रस्तावना- भारतीय काल गणना के अनुसार "चैत्र शुक्ल प्रतिपदा" के दिन से नवीन संवत्सर का आरंभ होता है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही "वर्ष प्रतिपदा" भी कहा जाता है। वर्ष प्रतिपदा का मुहूर्त सभी शुभ कार्यों को प्रारंभ करने के लिए उचित माना गया है। इस बार "चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रमी संवत् 2083" का शुभारंभ दिनांक 19 मार्च 2026 से होगा। सृष्टि के प्रारंभ से ही भारतवर्ष में काल गणना विभिन्न गौरवशाली घटनाक्रमों के कारण वर्ष प्रतिपदा से ही प्रारंभ होती है। इसी दिन को "भारतीय नववर्ष/भारतीय नव संवत्सर" के नाम से जाना जाता है। कतिपय कारणों से आज अपने देश में भी भारतीय नव संवत्सर के साथ-साथ अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार भी गणना को माना जाता है।

चैत्र शुक्ल वर्ष प्रतिपदा से जुड़ी विभिन्न गौरवशाली घटनाएं-

- ऐसी मान्यता है की सृष्टि के रचयिता "श्री ब्रह्मा जी" ने वर्ष प्रतिपदा को ही ब्रह्मांड की रचना की।
- "युगाब्द" (युधिष्ठिर संवत्) का प्रारंभ भी वर्ष प्रतिपदा को लगभग 5000 वर्ष पूर्व "सम्राट युधिष्ठिर" के राज्याभिषेक से हुआ।
- वर्ष प्रतिपदा को ही सम्राट विक्रमादित्य ने विदेशी आक्रांता शकों को बुरी तरह परास्त कर "शकारि" की उपाधि प्राप्त की।
- सिक्खों के द्वितीय गुरु "गुरु अंगददेव जी" का प्रकटोत्सव भी वर्ष प्रतिपदा के दिन मनाया जाता है।
- महर्षि दयानंद सरस्वती ने "आर्य समाज" की स्थापना भी वर्ष प्रतिपदा के दिन की थी।
- सिंध प्रांत के प्रसिद्ध समाज रक्षक वरुणावतार "संत झूलेलाल" जयंती भी वर्ष प्रतिपदा को ही है।
- भारत का राष्ट्रीय संवत् "शालिवाहन शक संवत्" भी वर्ष प्रतिपदा से ही सम्राट शालिवाहन की शक आक्रमणकारियों पर ऐतिहासिक विजय की यादगार में मनाया जाता है।
- हमारा देश कृषि प्रधान देश है, जहां इस समय प्रकृति में चहुं ओर पतझड़ के बाद हरियाली तथा खेतों में नवीन फसल (अनाज) का आगमन होता है।
- शक्ति की उपासना हेतु नौ दिवसीय "पवित्र नवरात्रों" का पूजन जिसमें मां दुर्गा के नौ रूपों की पूजा इसी दिन से प्रारंभ होती है।
- वर्ष प्रतिपदा को महाराष्ट्र में "गुड़ी पड़वा" कर्नाटक/आंध्र प्रदेश में "उगादि" तथा सिंध में "चेटी चंड" के रूप में मनाया जाता है।
- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक परम पूज्य "डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार" का जन्म भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रमी संवत् 1946 में दिनांक 01 अप्रैल 1889 को हुआ था।

प्रकाश वीर (संयोजक)
सामाजिक सद्भाव, नोएडा महानगर

प्रधानाचार्य जी की कलम से

तकनीक बने समावेशन और सशक्तिकरण का माध्यम

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) मानव इतिहास का एक परिवर्तनकारी अध्याय बनकर उभर रही है। आज के समय में एआई केवल एक तकनीकी उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह समाज, शिक्षा, अर्थव्यवस्था और विभिन्न क्षेत्रों में तेजी से बदलाव लाने वाली शक्ति बन चुकी है। भारत इस तकनीकी क्रांति का केवल सहभागी ही नहीं, बल्कि इसे दिशा देने और मार्गदर्शन करने की क्षमता भी रखता है। तेजी से बदलती इस दुनिया में स्किलिंग, रीस्किलिंग और लाइफलॉन्ग लर्निंग की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। इसलिए इन तीनों को एक जन आंदोलन के रूप में विकसित करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। निरंतर सीखने और नई तकनीकों को अपनाने की क्षमता ही आने वाले समय में समाज और राष्ट्र की प्रगति का आधार बनेगी।

यदि एआई को सही दिशा और उद्देश्य मिले, तो यह मानव क्षमता को बढ़ाने वाला प्रभावी साधन बन सकता है। लेकिन यदि इसका उपयोग दिशाहीन हो जाए, तो यही तकनीक प्रगति में बाधा भी बन सकती है। इसलिए आवश्यक है कि एआई को मशीन-सेंट्रिक दृष्टिकोण से निकालकर ह्यूमन-सेंट्रिक, संवेदनशील और जिम्मेदार बनाया जाए। वैश्विक स्तर पर एआई के लिए स्पष्ट मानक और नियम बनाना समय की एक बड़ी आवश्यकता बन गई है। विशेष रूप से डीपफेक और बनावटी कंटेंट जैसे खतरे खुले और लोकतांत्रिक समाज के लिए चुनौती बनते जा रहे हैं। डिजिटल दुनिया में पारदर्शिता बनाए रखने के लिए कंटेंट पर ऑथेंटिसिटी लेबल, वॉटरमार्किंग और स्पष्ट स्रोत मानकों की जरूरत बढ़ती जा रही है, ताकि लोगों को यह पता चल सके कि कौन-सा कंटेंट वास्तविक है और कौन-सा एआई द्वारा बनाया गया है।

देवेन्द्र शर्मा (प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

महावीर जयंती

स्वामी महावीर जैन धर्म के चौबीसवें और अंतिम तीर्थंकर थे। उनका जन्म 599 ईसा पूर्व वैशाली गणराज्य के कुंडलपुर में हुआ था। उनके पिता का नाम सिद्धार्थ और माता का नाम त्रिशला था। बाल्यकाल में उनका नाम वर्धमान था। बचपन से ही वे अत्यंत साहसी, शांत और गंभीर स्वभाव के थे, इसलिए उन्हें "महावीर" कहा जाने लगा।

महावीर स्वामी ने लगभग 30 वर्ष की आयु में राजसी जीवन का त्याग कर दिया और सत्य की खोज में संन्यास ग्रहण किया। उन्होंने 12 वर्षों तक कठोर तपस्या और ध्यान किया। अंततः उन्हें 'कैवल्य ज्ञान' की प्राप्ति हुई, अर्थात पूर्ण ज्ञान। इसके बाद उन्होंने समाज को सत्य, अहिंसा और आत्मसंयम का मार्ग दिखाया।

महावीर स्वामी के उपदेशों का मुख्य आधार अहिंसा था। उन्होंने कहा कि किसी भी जीव को मन, वचन और कर्म से कष्ट नहीं देना चाहिए। उन्होंने सत्य, अस्तेय (चोरी न करना), ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह जैसे सिद्धांतों का भी प्रचार किया। उनके ये पाँच महाव्रत आज भी जैन धर्म की आधारशिला माने जाते हैं।

महावीर स्वामी ने जाति-पांति और ऊँच-नीच का विरोध किया। उन्होंने सभी प्राणियों को समान माना और करुणा, प्रेम तथा सहिष्णुता का संदेश दिया। उनके विचारों ने समाज में नैतिकता और सदाचार की भावना को मजबूत किया।

527 ईसा पूर्व पावापुरी में महावीर स्वामी ने निर्वाण प्राप्त किया। उनका जीवन हमें त्याग, संयम और अहिंसा का संदेश देता है। आज भी उनके सिद्धांत विश्वभर में प्रासंगिक हैं और मानवता को शांति का मार्ग दिखाते हैं।

स्वामी महावीर का जीवन हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है।

विंतेश सिंह (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

विश्व महिला दिवस

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्रा फलाः क्रियाः ॥

प्रस्तावना : विश्व महिला दिवस हर वर्ष 8 मार्च को मनाया जाता है। यह दिन महिलाओं के सम्मान, उनके अधिकारों और समाज में उनके योगदान को सराहने के लिए समर्पित है। इस दिन दुनिया भर में महिलाओं की उपलब्धियों को याद किया जाता है और समानता के लिए जागरूकता फैलाई जाती है।

विश्व महिला दिवस का इतिहास : विश्व महिला दिवस की शुरुआत 20वीं शताब्दी की शुरुआत में हुई। वर्ष 1910 में Clara Zetkin ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने का प्रस्ताव रखा था। 1975 में United Nations ने इसे आधिकारिक रूप से मनाना शुरू किया। तब से यह दिन पूरे विश्व में मनाया जाता है।

महिलाओं का समाज में योगदान : महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रही हैं — शिक्षा, विज्ञान, राजनीति, खेल, कला और व्यापार आदि में। Rani Lakshmibai, Mary Kom और Kalpana Chawla जैसी महान महिलाओं ने देश और दुनिया का नाम रोशन किया है। आज महिलाएं पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ रही हैं।

महिला सशक्तिकरण का महत्व : किसी भी देश की प्रगति महिलाओं की भागीदारी के बिना संभव नहीं है। महिला सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, समान अधिकार और निर्णय लेने की स्वतंत्रता देना। जब महिलाएं सशक्त होंगी, तभी समाज और राष्ट्र मजबूत बनेगा।

उपसंहार : विश्व महिला दिवस हमें यह याद दिलाता है कि हमें महिलाओं का सम्मान करना चाहिए और उनके अधिकारों की रक्षा करनी चाहिए। हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम लैंगिक भेदभाव को समाप्त कर समानता और सम्मान का वातावरण बनाएंगे। विश्व महिला दिवस केवल एक दिन का उत्सव नहीं, बल्कि महिलाओं के प्रति सम्मान और समानता की भावना को जीवनभर अपनाने का संदेश है।

दीपिका शर्मा (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

विश्व जल दिवस

विश्व जल दिवस हर वर्ष 22 मार्च को मनाया जाता है। इस दिन का उद्देश्य लोगों को जल के महत्व के बारे में जागरूक करना और जल संरक्षण के लिए प्रेरित करना है। इसकी शुरुआत वर्ष 1993 में United Nations द्वारा की गई थी। पानी हमारे जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

आज के समय में बढ़ती जनसंख्या, प्रदूषण और जल की बर्बादी के कारण पानी की कमी की समस्या बढ़ती जा रही है। हमें पानी का सही उपयोग करना चाहिए और उसे व्यर्थ नहीं बहाना चाहिए। वर्षा जल संचयन, पेड़ लगाना और जल स्रोतों की सफाई जैसे उपायों से हम पानी बचा सकते हैं।

विश्व जल दिवस हमें यह संदेश देता है कि “जल ही जीवन है”। इसलिए हमें मिलकर जल संरक्षण करना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ियों को भी पर्याप्त पानी मिल सके।
पानी की बर्बादी रोको, धरती को खुशहाल बनाओ।

नेहा चौधरी (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

शहीद दिवस हर वर्ष 23 मार्च को मनाया जाता है। इस दिन हम अपने देश के वीर स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि देते हैं, जिन्होंने भारत की आज़ादी के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। 23 मार्च 1931 को भगत सिंह, शिवराम राजगुरु और सुखदेव थापर को ब्रिटिश सरकार ने फांसी दी थी। उनकी वीरता और बलिदान को याद करने के लिए इस दिन को शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है।

इस दिन स्कूलों, कॉलेजों और विभिन्न संस्थानों में कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। लोग दो मिनट का मौन रखकर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। शहीद दिवस हमें देशभक्ति, साहस और त्याग की प्रेरणा देता है। हमें उनके आदर्शों पर चलकर देश की सेवा करनी चाहिए और एक अच्छा नागरिक बनना चाहिए। शहीदों का बलिदान हमें हमेशा याद दिलाता है कि आज जो आज़ादी हमें मिली है, वह उनके त्याग का परिणाम है।

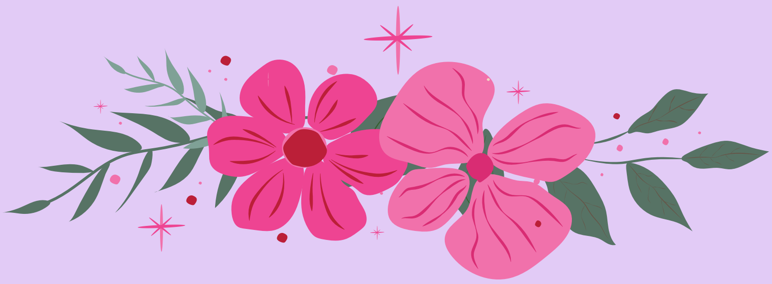

निधि शुक्ला (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

झूलेलाल जयंती

भारतीय धर्मग्रंथों में कहा गया है कि जब-जब अत्याचार बढ़े हैं, नैतिक मूल्यों का क्षरण हुआ है तथा आसुरी प्रवृत्तियां हावी हुई हैं, तब-तब किसी न किसी रूप में ईश्वर ने अवतार लेकर धर्मपरायण प्रजा की रक्षा की। संपूर्ण विश्व में मात्र भारत को ही यह सौभाग्य एवं गौरव प्राप्त हुआ है कि यहां का समाज साधु-संतों के बताए मार्ग पर चलता आया है।

ऐसी ही एक कथा भगवान झूलेलालजी के अवतरण की है।भगवान झूलेलाल जी का जन्म सिंध प्रांत (आज का पाकिस्तान) में नसरपुर नामक स्थान पर हुआ माना जाता है। उनके बचपन का नाम उडेरोलाल बताया जाता है। बचपन से ही उनमें दिव्य गुण दिखाई देते थे। कहा जाता है कि वे जल पर खड़े हो जाते थे और लोगों को चमत्कारों के माध्यम से यह विश्वास दिलाते थे कि ईश्वर एक है।भगवान झूलेलाल सिंधी समाज के आराध्य देव माने जाते हैं। उनका जन्म चेटी चांद के पावन अवसर पर हुआ था, जिसे आज भी सिंधी समाज बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाता है। कहा जाता है कि उस समय सिंध प्रदेश में लोगों पर अत्याचार हो रहे थे। तब लोगों की प्रार्थना सुनकर भगवान झूलेलाल ने अवतार लिया और सबको अन्याय से मुक्ति दिलाई। भगवान झूलेलाल को जल देवता का अवतार माना जाता है। उन्हें “दरियालाल” भी कहा जाता है क्योंकि वे जल और जीवन के रक्षक माने जाते है। भगवान झूलेलाल जी के जीवन से हमें कई महत्वपूर्ण प्रेरणाएँ मिलती हैं जैसे एकता और भाईचारा, सत्य और न्याय, धैर्य और विश्वास, साहस, परोपकार और सेवा उनका जीवन त्याग, साहस और समाज की भलाई के लिए समर्पित था। आज भी सिंधी समाज उन्हें अपने रक्षक और मार्गदर्शक के रूप में मानता है।

भगवान झूलेलाल का जीवन हमें सिखाता है कि सच्चाई, धैर्य और ईश्वर में विश्वास से हर कठिनाई को दूर किया जा सकता है।उनके जीवन से हमे प्रेरणा मिलती है कि हमे सत्य, साहस और एकता से समाज को मजबूत बनाना है।

अंजलि शर्मा (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

डॉ हेडगेवार जन्म दिवस

डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार एक महान भारतीय स्वतंत्रता सेनानी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के संस्थापक थे। उनका जन्म 1 अप्रैल 1889 को नागपुर, मध्य प्रदेश में हुआ था। उनके पिता बलिराम पंत हेडगेवार एक वकील थे और उनकी माता रेवतीबाई एक धार्मिक महिला थीं। हेडगेवार ने अपनी शिक्षा नागपुर और कलकत्ता में प्राप्त की। उन्होंने चिकित्सा का अध्ययन किया और एक डॉक्टर बन गए, लेकिन जल्द ही उन्होंने अपना जीवन स्वतंत्रता आंदोलन और सामाजिक सेवा के लिए समर्पित कर दिया। 1925 में, हेडगेवार ने आरएसएस की स्थापना की, जिसका उद्देश्य भारतीय समाज को एकजुट करना और देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ना था। उन्होंने आरएसएस को एक सांस्कृतिक और सामाजिक संगठन के रूप में स्थापित किया, जिसका उद्देश्य भारतीय समाज को मजबूत करना और देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ना था। हेडगेवार ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और कई बार जेल गए। उन्होंने महात्मा गांधी के नेतृत्व में चल रहे स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया और आरएसएस को एक प्रमुख भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया।

हेडगेवार के सामाजिक कार्य के कुछ प्रमुख पहलू हैं:

शिक्षा*: हेडगेवार ने शिक्षा को समाज के विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण माना। उन्होंने कई स्कूल और कॉलेज स्थापित किए और शिक्षा को अधिक व्यापक और सुलभ बनाने के लिए काम किया।

स्वास्थ्य*: हेडगेवार ने स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए काम किया। उन्होंने कई अस्पताल और स्वास्थ्य केंद्र स्थापित किए और लोगों को स्वास्थ्य के बारे में जागरूक करने के लिए अभियान चलाए।

सामाजिक सुधार*: हेडगेवार ने सामाजिक सुधार के लिए काम किया। उन्होंने अस्पृश्यता और जाति प्रथा के खिलाफ लड़ाई लड़ी और महिलाओं के अधिकारों के लिए काम किया। हेडगेवार के सामाजिक कार्य का प्रभाव आज भी देखा जा सकता है। आरएसएस और उसके सहयोगी संगठन देश भर में शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुधार के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। हेडगेवार का निधन 21 जून 1940 को नागपुर में हुआ था। उनकी मृत्यु के बाद, आरएसएस ने उनके विचारों और आदर्शों को आगे बढ़ाया और आज यह एक प्रमुख सामाजिक और सांस्कृतिक संगठन है।

महेंद्र जी (आचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

मातृ हस्तेन भोजनम् कार्यक्रम

विद्या भारती मेरठ प्रान्त
सरस्वती शिशु मंदिर
मातृ हस्तेन भोजनम्
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध
सरस्वती शिशु मन्दिर
सी-41, सैक्टर-12
नोएडा, गौतमबुद्ध नगर

दिनांक- 06/02/2026 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में कक्षा अरुण(Nursery), उदय(LKG) व प्रभात(UKG) तक के भैया-बहिनों के लिए आज ‘मातृ हस्तेन भोजनम्’ कार्यक्रम का भावपूर्ण एवं प्रेरणादायक आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि श्रीमती रेनू जी, श्रीमान प्रकाश वीर जी, श्रीमती ममता यादव (जनसेवा सामाजिक फाउंडेशन की अध्यक्षा), श्रीमती अनीता जी के करकमलों द्वारा दीप प्रज्वलन एवं पुष्पार्चन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में मातृ-स्नेह, पारिवारिक संस्कार और भारतीय संस्कृति के मूल्यों का विकास करना था। माताओं ने विद्यालय में आकर अपने हाथों से बच्चों को स्नेहपूर्वक भोजन कराया, जिससे वातावरण अत्यंत भावुक एवं संस्कारमय बन गया।

प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी ने बच्चों को माँ के प्रेम, त्याग और सेवा का महत्व बताया। कार्यक्रम ने विद्यालय और अभिभावकों के संबंधों को और अधिक सुदृढ़ किया। सभी माताओं के सहयोग से आयोजन सफल एवं स्मरणीय रहा।

चलचित्र अवलोकन

दिनांक -12/02/2026 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में विद्यालय के समस्त स्टाफ सदस्यों को प्रसिद्ध फिल्म "गोदान" का सामूहिक प्रदर्शन कराया गया। यह फिल्म गौ-देखभाल एवं गौ-सेवा : हमारी सांस्कृतिक और मानवीय जिम्मेदारी से संबंधित है। भारतीय संस्कृति में गौ को माता के समान आदर प्राप्त है। गौ माता केवल दूध देने वाला पशु ही नहीं, बल्कि दर्शाया गया है कि उनके स्पर्श मात्र से अनेक समस्याओं एवं रोगों का समाधान पाया जा सकता है।

फिल्म का उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान तक सीमित न रहकर व्यवहारिक जीवन में गौ माता के मूल्यों को भी आत्मसात करने से हैं। यह प्रेरणादायक फिल्म समस्त आचार्यों एवं स्टाफ सदस्यों को समाज में गौ माता की वास्तविकताओं को समझने की प्रेरणा प्रदान करती है। इस प्रकार के आयोजन निश्चित रूप से सामाजिक दृष्टिकोण हेतु अत्यंत उपयोगी एवं प्रेरणादायक सिद्ध होते हैं।

रामकृष्ण परमहंस जयंती

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में महान संत रामकृष्ण परमहंस जी की जयंती श्रद्धा, भक्ति और आध्यात्मिक उत्साह के साथ मनाई गई। दीप प्रज्वलन एवं पुष्प अर्पित कर रामकृष्ण परमहंस जी के जीवन प्रसंगों के बारे में बताया गया। उनके जीवन की सरलता, ईश्वर के प्रति अटूट आस्था और “सर्वधर्म समभाव” का संदेश विशेष रूप से रेखांकित किया गया। उन्होंने मानवता, प्रेम और सेवा को ही सच्चा धर्म बताया तथा यह संदेश दिया कि सभी धर्म एक ही सत्य की ओर ले जाते हैं।

विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी ने अपने संबोधन में कहा कि रामकृष्ण परमहंस जी का जीवन हमें सिखाता है कि सच्ची श्रद्धा, निष्ठा और सकारात्मक विचारों से हम अपने जीवन को श्रेष्ठ बना सकते हैं।

वेश प्रतियोगिता

हमारे विद्यालय में समय-समय पर अनेक रोचक और शिक्षाप्रद गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। उन्हीं में से एक महत्वपूर्ण गतिविधि वेश प्रतियोगिता है। इसके माध्यम से भैया-बहिनों की स्वच्छता का अवलोकन किया जाता है। इस प्रकार की प्रतियोगिताएँ बच्चों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाती हैं।

आचार्य-अभिभावक गोष्ठी

Shot on OnePlus
Powered by Triple Camera

Shot on OnePlus

Shot on OnePlus
Powered by Triple Camera

Shot on OnePlus

Shot on OnePlus
Powered by Triple Camera

BASIC VERBS
WASH
BUY
PLAY
RUN
SLEEP
JUMP
WALK
SMILE
EAT
DRINK
WATCH
SELL
Shot on OnePlus
Powered by Triple Camera

Saturn
Earth
WELCOME
TO
PTM
Shot on OnePlus

Shot on OnePlus
Powered by Triple Camera

विद्यालय में समय-समय पर आचार्य-अभिभावक गोष्ठी का आयोजन किया जाता है। इस गोष्ठी के माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों की पढ़ाई, रुचि, क्षमता और कमजोरियों के बारे में अभिभावकों को जानकारी देते हैं। वहीं अभिभावक भी अपने बच्चों की आदतों, समस्याओं और घर के वातावरण के बारे में शिक्षकों को बताते हैं।

अंग्रेज़ी संभाषण

दिनांक -16/02/2026 दिन- सोमवार को सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा के वंदना सत्र में दीपक जी, धर्मेंद्र जी व English communication में प्रशिक्षण प्राप्त आचार्यों का विद्यालय भ्रमण हेतु आगमन हुआ। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी व आए अतिथियों ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन व पुष्पार्चन किया तथा भैया-बहिनों से वार्ता की।

विद्यालय के समस्त स्टाफ को आचार्य सीमा जी ने पी.पी.टी. के द्वारा क्रिया शोध विषय से संबंधित जानकारी दी।

हिन्दू सम्मेलन कार्यक्रम

दिनांक-17/02/26 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में आयोजित हिंदू सम्मेलन – प्रेरणा, संस्कार और सम्मान का अनुपम संगम....

इस अवसर पर आए अतिथियों द्वारा मां सरस्वती के समक्ष पुष्पार्चन एवं दीपप्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। यह कार्यक्रम भारतीय संस्कृति, सनातन मूल्यों तथा राष्ट्रभावना के संवर्धन हेतु अत्यंत प्रेरणादायक सिद्ध हुआ। सम्मेलन में समाज के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे अनेक सम्मानित अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति रही, जिससे कार्यक्रम की शोभा और भी बढ़ गई। अतिथिगणों ने अपने प्रेरक उद्बोधनों के माध्यम से भैया-बहिनों को जीवन में अनुशासन, सेवा-भाव, चरित्र निर्माण तथा राष्ट्रहित में कार्य करने की प्रेरणा दी। उन्होंने बताया कि हमारी संस्कृति ही हमारी पहचान है और उसके संरक्षण व प्रचार-प्रसार में प्रत्येक विद्यार्थी की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इस अवसर पर विद्यालय के कुछ भैया-बहिनों को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। अंत में विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

छत्रपति शिवाजी एवं श्री गुरुजी जयंती

दिनांक 19/02/26 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में वीर शिरोमणि छत्रपति शिवाजी महाराज तथा राष्ट्र जीवन को दिशा देने वाले महान विचारक माधव सदाशिव गोलवलकर (गुरुजी) की जयंती श्रद्धा, उत्साह से मनाई गई।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं वंदना के साथ किया गया। इस अवसर पर आचार्यों ने छत्रपति शिवाजी महाराज के शौर्य, साहस, राष्ट्रभक्ति तथा जनकल्याण के प्रति उनके समर्पण पर प्रकाश डाला। साथ ही गुरुजी के विचारों को स्मरण करते हुए आचार्यों ने भैया-बहिनों को बताया कि उनका जीवन है। यह जयंती समारोह विद्यालय परिवार के लिए प्रेरणा, संस्कार और राष्ट्रप्रेम की भावना को सुदृढ़ करने वाला अत्यंत सार्थक आयोजन सिद्ध हुआ।

प्रवेश परीक्षा

दिनांक 21/02/26 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में कक्षा अरुण(Nursery), उदय(LKG) एवं प्रभात(UKG) के भैया-बहिनों की प्रवेश परीक्षा सफलतापूर्वक संपन्न कराई गई।

इस प्रवेश परीक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता, मूलभूत ज्ञान, भाषा-समझ तथा सामान्य जागरूकता का आकलन करना था, जिससे उनकी योग्यता के अनुरूप उचित मार्गदर्शन एवं शिक्षण व्यवस्था सुनिश्चित की जा सके। आचार्यों द्वारा भैया-बहनों को सरल एवं सकारात्मक वातावरण प्रदान किया गया, जिससे सभी विद्यार्थियों ने आत्मविश्वास के साथ परीक्षा में सहभागिता की। भैया बहिनों को स्माइली बॉल, टॉफी व पेंसिल देकर उनका उत्साहवर्धन किया गया। निश्चय ही यह प्रवेश परीक्षा भैया-बहनों के उज्ज्वल भविष्य की सुदृढ़ नींव सिद्ध होगी।

सप्त शक्ति समापन कार्यक्रम

दिनांक 25 फरवरी 2026 को "सप्त शक्ति संगम समापन समारोह" में विद्यालय से 05 बहनें सम्मिलित हुई। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती पूनम शर्मा जी एवं मुख्य वक्ता श्रीमती नम्रता जी, अध्यक्षा डॉक्टर रुचि गोयल जी एवं संयोजिका वंदना जी रही। इस कार्यक्रम में मेरठ प्रांत के सभी जिलों से अधिक संख्या में बहनें उपस्थित रहीं। इस कार्यक्रम का आयोजन दुर्गावती हेमराज सरस्वती विद्या मंदिर नेहरू नगर, गाजियाबाद में संपन्न हुआ।

जन्मोत्सव हवन पूजन कार्यक्रम

दिनांक- 27/02/26 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा परिसर में जनवरी माह में जन्मे समस्त भैया-बहिनों के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में एक पावन हवन-पूजन कार्यक्रम का आयोजन अत्यंत श्रद्धा एवं उल्लास के साथ किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य तथा सद्गुणों के विकास के लिए ईश्वर से प्रार्थना करना रहा। हवन-पूजन में आचार्या बहिन के मार्गदर्शन में विधिवत मंत्रोच्चारण के साथ यज्ञ संपन्न कराया गया। सभी भैया-बहिनों ने श्रद्धापूर्वक आहुति अर्पित की तथा अपने जीवन में सत्य, संस्कार, अनुशासन और सेवा भाव को अपनाने का संकल्प लिया। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी एवं आए अभिभावक बंधुओं द्वारा भैया-बहिनों को शुभकामनाएँ एवं आशीर्वाद प्रदान किया गया।

स्वर्ण प्राशन

दिनांक 28/02/2026 दिन- शनिवार को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा के शिशु वाटिका में भैया/बहिनों को स्वर्ण प्राशन औषधि का सेवन करवाया गया। जिसमें विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी ने भगवान धन्वंतरि जी की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन व पुष्पार्चन किया। स्वर्ण प्राशन के सेवन से भैया/बहिनों का शारीरिक और मानसिक विकास बेहतर होता है और वे बीमारियों से बचे रहते हैं।

बताओ तो जानें

WORD SEARCH PUZZLE

C	A	R	R	O	T	R	W	P	E
P	E	P	P	W	Q	X	R	U	G
C	T	O	M	A	T	O	A	M	G
O	V	E	G	C	V	G	D	P	P
R	R	T	E	T	O	M	I	K	L
N	P	E	P	P	E	R	S	I	A
C	A	P	B	A	G	E	H	N	N
W	P	O	T	A	T	O	E	S	T
C	U	C	U	M	B	E	R	A	Q
W	R	G	D	W	S	A	A	F	I
P	O	T	A	F	P	G	T	S	F

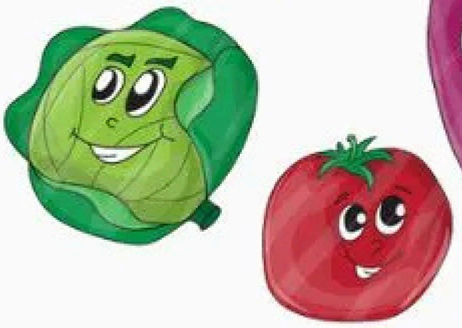

पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी

1. चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को अन्य किस नाम से जाना जाता है?

2. स्वामी महावीर जी का जन्म कब और कहां हुआ था?

3. विश्व महिला दिवस कब मनाया जाता है?

4. विश्व जल दिवस हमें क्या संदेश देता है?

5. शहीद दिवस कब मनाया जाता है?

6. भगवान झूलेलाल जी का जन्म कहां हुआ था?

7. झूलेलाल जी के बचपन का नाम क्या था?

8. किस वर्ष डॉ. हेडगेवार जी ने आरएसएस की स्थापना की?

9. सप्तशक्ति समापन कार्यक्रम किस स्थान पर आयोजित किया गया था?

10. विश्व जल दिवस की शुरुआत किसके द्वारा की गई थी?

आलोक- उपरोक्त सभी प्रश्नों के उत्तर इसी अंक के लेखों में विद्यमान है अतः इसी अंक के उत्तर मान्य होंगे।
कक्षा- द्वितीय से पञ्चम तक के सभी भैया/बहिनों को ई- पत्रिका के पृष्ठ क्रमांक 29 व 30 में दिए प्रश्नों के उत्तर कक्षाचार्य जी के व्हाट्सप्प पर दिनांक - 18 मार्च 2026 तक भेजने होंगे।